विदेशी निवेश बढ़ने का देश पर असर

भारत डोगरा

हाल में जारी विज्ञापनों में केंद्र सरकार ने दावा किया है कि पिछले 4 वर्षों में ही भारत में 175 अरब डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ है। यह भी बताया गया है कि भारत को अब तक जितना प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त हुआ है, उसका 94 प्रतिशत हिस्सा पिछले एक दशक में (वर्ष 2003-13) के दौरान प्राप्त हुआ।

इस जानकारी से इतना तो स्पष्ट है कि भारत में हाल के वर्षों में विदेशी निवेश तेज़ी से बढ़ा है। सवाल यह है कि इस तेज़ी से बढ़ते विदेशी निवेश का देश पर जो असर हुआ है वह लोगों के हित में है या नहीं। इस सवाल का उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें अधिक विस्तार से जानना पड़ेगा कि किस तरह का विदेशी निवेश हुआ है, किस तरह की परियोजनाओं में निवेश हुआ है और ये परियोजनाएं विकास को किस दिशा में ले जा रही हैं।

विशेष चिंता का विषय वे परियोजनाएं हैं जो स्थानीय, विशेषकर ग्रामीण व आदिवासी समुदायों के प्राकृतिक संसाधन आधार को छीनती हैं या उन्हें क्षतिग्रस्त कर देती हैं। ऐसे अधिकांश समुदाय के जीवन व आजीविका का आधार उनके आसपास के प्राकृतिक संसाधन हैं। जल्दबाज़ी में व ऊंची प्राथमिकता देकर लाई गई विदेशी निवेश आधारित खनन व औद्योगिक परियोजनाएं यदि जल, जंगल, ज़मीन समुदायों के अधिकार से छीनती हैं या इन प्राकृतिक संसाधनों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त करती हैं तो ऐसे विदेशी निवेश को देश के लोगों के हित में नहीं माना जा सकता है।

यह भी देखना पड़ेगा कि विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए कैसी सुविधाएं दी जा रही हैं, क्या आकर्षण दिया जा रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि खनिज या कच्चे माल बहुत सस्ते में दिए जा रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि विदेशी निवेशकों को खुश करने के लिए उन्हें बहुत टैक्स माफी दी जा रही है जिससे देश के खज़ाने की क्षति हो रही है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि विदेशी कंपनियों की टैक्स चोरी या अन्य भ्रष्टाचार की ओर से आंखें मूंदी जा रही है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि उन्हें तुष्ट करने के लिए मज़दूरों के अधिकारों को कम किया जा रहा है व पर्यावरण के नियमों की अवहेलना की जा रही है। यदि यह सब हो रहा है तो निश्चय ही इसमें देश की भलाई नहीं है अपितु क्षति है। यह भी देखना होगा कि विदेशी निवेश से कुल कितना मुनाफा देश के बाहर भेजा जा रहा है।

एक अन्य विचारणीय सवाल यह है कि विदेशी निवेश में जो तकनीकें व तौर-तरीके अपनाए जाते हैं उनसे कितने व कैसे रोज़गार का सृजन होता है। श्रम-सघन तकनीकों की जो प्राथमिकता हमारे देश में है, विदेशी निवेश उसके अनुकूल है कि नहीं? इस पर भी पैनी नज़र रखने की ज़रूरत है कि विदेशी निवेश जिन क्षेत्रों में हो रहा है वह अधिक प्रदूषण फैलाने से तो नहीं जुड़े हैं।

अंत में यह भी ध्यान में रखना ज़रूरी है कि विदेशी पूंजी से देश की अर्थव्यवस्था को मज़बूती या स्थिरता मिल रही है, या हॉट मनी की प्रवृत्ति बढ़ रही है यानी विदेशी निवेश मुनाफे की तलाश में तेज़ी से आ-जा रहा है। यदि ऐसा हो रहा है तो इससे अर्थव्यवस्था में मज़बूती नहीं आती है अपितु उसकी अस्थिरता बढ़ती ही है।

इन सब मुद्दों को ध्यान में रखकर ही कहा जा सकता है कि विदेशी निवेश का चरित्र क्या है व यह देश के हित में है या नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***